

डॉ. डेविड टर्नर, मैथ्यू

व्याख्यान 9बी – मैथ्यू 21-22: विजयी प्रवेश और दुखद परिणाम

एक बार फिर नमस्कार, मैं डेविड टर्नर हूँ, और यह हमारी मैथ्यू कक्षा में व्याख्यान 9बी है। इस व्याख्यान में, हम मैथ्यू 21 और 22 में कुछ मुख्य बिंदुओं को कवर करने का प्रयास करने जा रहे हैं। हमारे प्रभु यीशु यरूशलेम में आ चुके हैं, और तथाकथित विजयी प्रवेश होता है, लेकिन परिणाम दुखद होते हैं।

हमें बहुत कुछ कवर करना है, इसलिए हम तेज़ी से आगे बढ़ेंगे। जहाँ तक विजयी प्रवेश की बात है, आइए इसे इस तरह से देखें। यीशु के यरूशलेम में प्रवेश के समय का दृश्य एक परिचित दृश्य है।

एक विजयी राजा गौरव और शक्ति के सभी साज-सामान के साथ विजयी होकर शहर में प्रवेश करता है। लेकिन इस विजयी प्रवेश के बारे में कुछ बहुत ही अजीब बात है। राजा साधारण वस्त्र पहने हुए है, न कि शाही वस्त्र या पूर्ण सैन्य वैभव में।

वह एक साधारण युवा गधे पर सवार है, न कि एक तेजतर्रार युद्ध के घोड़े पर। वह नम्र है, सैन्यवादी नहीं। उसके प्रवेश से मिश्रित संकेत मिलते हैं, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि पूरा यरूशलेम उसकी पहचान के बारे में उलझन में है।

विरोधाभासी रूप से, यीशु के प्रवेश में शक्ति और महिमा के साथ-साथ विनम्रता की छवि भी शामिल है। अपने पूरे मंत्रालय के दौरान, उनकी शिक्षाएँ उच्च विनम्रता और कम गर्व का उदाहरण हैं। अपने कॉनकॉर्डेंस में उन शब्दों को देखें।

इसलिए, तथाकथित विजयी प्रवेश, यीशु के राज्य के उल्टे-सीधे मूल्यों का प्रतीक है। यीशु ने दुनिया की महानता के प्रतिमान को मौलिक रूप से बदल दिया है, जो कि विनम्र सेवा में पाया जाता है, न कि अहंकारी शासन में। लेकिन एक बहुत ही अलग तस्वीर के लिए, यीशु की वापसी और न्याय के लिए, प्रकाशितवाक्य 19.11 और उसके बाद देखें।

भीड़ की चीखों में बहुत विडंबना है। वे एक ही समय में सही और गलत हैं। वे यीशु को मसीहाई भाषा का नाम देने में सही हैं, लेकिन उस मसीहाई भाषा के अर्थ को समझने में वे गलत हैं।

वे मसीहाई ग्रंथों को सही ढंग से उद्धृत करते हैं, लेकिन वे गलत तरीके से अपने मसीहा को एक विजयी सैन्य नायक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। और यह आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि शिष्यों ने भी अभी तक उस उद्धरण को नहीं समझा है, आपके बीच यह अलग होगा, 2026। इस कारण से, विजयी प्रवेश भी, जैसा कि हमने कहा है, एक दुखद प्रवेश है।

अब हम 21:12-17 में मंदिर की सफाई या शुद्धिकरण की ओर तेजी से बढ़ते हैं। अप्रत्याशित रूप से, यरूशलेम में प्रवेश करने पर यीशु की पहली कार्रवाई इसे दमनकारी रोमन कब्जाकारी ताकतों से बचाने के लिए नहीं थी, बल्कि इसे अपने स्वयं के पाखंड से बचाने के लिए थी। यथास्थिति को सीधे तौर पर खतरे में डालने के बजाय, वह मंदिर, इज़राइल के धार्मिक केंद्र और उसके स्थापित नेतृत्व का सामना करता है। प्रार्थना का घर होने के बजाय, मंदिर को व्यावसायिक गतिविधि के केंद्र में बदल दिया गया है।

यह पूरी तरह से स्पष्ट नहीं है कि यीशु ने बाहरी मंदिर प्रांगणों में व्यापार पर सिद्धांत के रूप में आपत्ति जताई थी या फिर उनके कार्य बेईमान लालच के विरुद्ध थे, जो धार्मिक तीर्थयात्रियों के ईमानदार धार्मिक उद्देश्यों का लाभ उठाते थे। किसी भी दर पर, यह महत्वपूर्ण है कि मंदिर में उनकी प्रमुख गतिविधियाँ पाखंड के विरुद्ध और ज़रूरतमंदों के पक्ष में निर्देशित हैं। जैसा कि उनके पहले के नबियों ने किया था, यीशु ने इस्राएल की स्थापित पूजा के भ्रष्टाचार के विरुद्ध और उन लोगों के लिए बात की और काम किया जो बिना किसी दर्जे के हैं।

इसलिए, मंदिर में यीशु के कार्य उस युगांतिक उलटफेर का तर्क देते हैं जिसमें नम्र लोग पृथ्वी के वारिस होंगे, जबकि भ्रष्ट नेताओं को नीचा दिखाया जाएगा। इस प्रकरण में निहित क्राइस्टोलॉजी प्रभावशाली है। मंदिर में यीशु का उपचार, साथ ही साथ उसका पहले से शुद्धिकरण, दोनों ही 12.6 में पहले कही गई बातों को प्रदर्शित करते हैं, यहाँ मंदिर से भी बड़ा एक है।

जब यीशु बच्चों की प्रशंसा को सही ठहराने के लिए भजन 8:2 का हवाला देते हैं, तो वे स्पष्ट रूप से उस प्रशंसा और आराधना के योग्य होने का दावा करते हैं, जो भजन सृष्टिकर्ता परमेश्वर को निर्देशित करता है। मैथ्यू के लिए, ऐसी अंतर्दृष्टि 11:25 के अनुसार, ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के कारण है, न कि मानवीय बुद्धि या अंतर्ज्ञान के कारण। इसलिए यह पूरी तरह से उचित है कि केवल बच्चों को ही इस्राएल के स्थापित पदानुक्रम की तुलना में यीशु की पहचान के बारे में बेहतर समझ है। अब बात यह है कि मंदिर का सफ़ाया नवीनीकरण है या विनाश।

मंदिर में यीशु के कार्यों को सुधार या शुद्धिकरण के कार्य के रूप में देखना आम बात है। लेकिन कुछ लोग तर्क देते हैं कि यीशु मंदिर को सुधारने के बजाय उसके विनाश की घोषणा कर रहे थे। यीशु ने वास्तव में 24:2 में मंदिर के विनाश की भविष्यवाणी की थी, लेकिन सुसमाचारों में चित्रित गतिविधियाँ मंदिर की बलिदानपूर्ण सेवकाई का सामना नहीं करती थीं, बल्कि उन वाणिज्यिक उद्यमों का सामना करती थीं जो इसके लिए परजीवी थे।

यीशु ने पुजारियों के साथ हस्तक्षेप नहीं किया, बल्कि वित्तीय लेन-देन में लगे लोगों के साथ हस्तक्षेप किया। पुराने नियम में, भविष्यवक्ताओं ने आम तौर पर मंदिर और उसके पुजारियों के भ्रष्टाचार की निंदा की, लेकिन ऐसे दैवज्ञों ने बलि प्रणाली का विरोध नहीं किया, बल्कि इसके दुरुपयोग का विरोध किया। उदाहरण के लिए, 1 शमूएल 22:18 और 19, यशायाह 28:7, यिर्मयाह 6:13, यहजेकेल 8 से 10, होशे 4:4 से 6, मीका 3:11 और सपन्याह 3:4 को देखें। मंदिर में यरूशलेम के भ्रष्टाचार का उल्लेख इंटरटेस्टामेंटल काल के बाद के यहूदी ग्रंथों में भी किया गया है।

मंदिर की सफाई एक ऐसा कार्य था जो मंदिर के दुरुपयोग के सुधार और दुरुपयोग जारी रहने पर आने वाले न्याय दोनों का प्रतीक था। मंदिर के भ्रष्टाचार के खिलाफ विरोध और इसके भविष्य के विनाश की भविष्यवाणी परस्पर अनन्य नहीं हैं, खासकर जब 23:39 के अनुसार पश्चाताप की आशा थी, और एक युगांतकारी मंदिर के उत्थान की आशा थी, यहजेकेल 40 से 48। पुराने नियम में वास्तविक भविष्यवाणी गतिविधि न केवल न्याय और आशा की भविष्यवाणी करती है, बल्कि इज़राइल के वाचा दायित्वों के वर्तमान परित्याग का भी सामना करती है।

ऐसा हो सकता है कि मत्ती ने यीशु के कार्यों में मलाकी 3.1 और उसके बाद प्रभु के अचानक अपने मंदिर में आने की पूर्ति देखी हो। एक और संभावना जकर्याह 14:21 के सबसे संभावित अनुवाद के रूप में बताई गई है, जिसमें एक ऐसे दिन की कल्पना की गई है जिसमें प्रभु के घर में कोई व्यापारी नहीं होगा। अब, मत्ती 21:18 से 22 में अंजीर के पेड़ को शाप देना।

अंजीर के पेड़ को शाप देना इस संदर्भ में यीशु का तीसरा प्रतीकात्मक कार्य है। यीशु ने गधे के बच्चे पर सवार होकर शहर में प्रवेश किया और मंदिर से व्यापारिक गतिविधियों को हटा दिया। ये कार्य क्रमशः यीशु की राजा और भविष्यवक्ता की भूमिका को दर्शाते हैं।

अंजीर के पेड़ को शाप देने में भी भविष्यवाणी की भूमिका जारी रहती है, जो सभी खातों के अनुसार यीशु द्वारा की गई सबसे अजीब चीजों में से एक है। लेकिन अगर कोई ऊपर दिए गए नोट्स में पुराने नियम के अंशों को देखता है, तो, ठीक है, मुझे माफ करें, अगर कोई पुराने नियम के अंशों को देखता है, जिनके बारे में हमने पहले बात की है, तो वह पहचान लेगा कि इस तरह के भविष्यवाणी वाले दृष्टांत अक्सर अजीब होते थे। अंजीर के पेड़ को फटकारना या शाप देना दो धार्मिक सबक देता है।

सबसे पहले, बंजर अंजीर का पेड़ उन फलहीन यहूदी नेताओं को चित्रित करता है जिनके मंदिर को हाल ही में साफ किया गया था। पाठकों में बच्चों की तुलना में यीशु के लिए कम प्रशंसा है, 21:15, और 16। वे यीशु के निर्विवाद चमत्कारों को देखते हैं और उनके आशीर्वाद के लिए परमेश्वर की प्रशंसा करने के बजाय यीशु के अधिकार पर सवाल उठाते हैं।

मत्ती में नेताओं की निष्फलता पर हमेशा ज़ोर दिया गया है। यहाँ भी इसे बहुत ज़ोरदार तरीके से बताया गया है, लेकिन यीशु की पूरी और अंतिम निंदा अभी अध्याय 23 में आनी बाकी है। परमेश्वर के दूतों को अस्वीकार करने के परिणाम होंगे।

दूसरा, कमज़ोर शिष्यों को अभी भी अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर देने के लिए परमेश्वर की शक्ति में विश्वास विकसित करने की आवश्यकता है। उनके कम विश्वास को यीशु ने पहले भी कई बार फटकारा है, और एक बार फिर, उन्हें इस विश्वास में बढ़ने के लिए स्वीकार किया गया है। उन्हें अपने विश्वास में बढ़ने की चुनौती दी गई है।

यह उचित है कि यह पाठ मंदिर से जुड़े संदर्भ में आता है, क्योंकि इसे 21:13 में सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर कहा गया है और यशायाह 56:7 से इसकी तुलना की गई है। शायद इन दो असंबंधित पाठों को यहाँ एक साथ रखने का कारण अविश्वासी यहूदी नेताओं की निष्फलता की तुलना यीशु के विश्वासी शिष्यों की संभावित फलदायीता से करना है। और अब, जैसे-जैसे हम

यहाँ आगे बढ़ते हैं, यीशु और यूहन्ना का अधिकार, वह मुद्दा जो अध्याय 21, आयत 23 से 32 में आता है। यीशु से उसके अधिकार के स्रोत के बारे में पूछा गया सवाल कोई मासूम सवाल नहीं है।

यीशु के शक्तिशाली शब्दों और कार्यों के बारे में मत्ती के वर्णन ने यहूदी नेताओं को बार-बार स्पष्ट किया है कि यीशु का अधिकार स्वर्ग से है। उदाहरण के लिए, 7:28, 29, 9:1 से 8:12, 6:8, 28, 38, 41 और 42, अध्याय 15:1 से 12 और 16:1। लेकिन नेता उस भीड़ की तुलना में कम समझदार हैं जिसका वे नेतृत्व करने का दावा करते हैं, क्योंकि भीड़ भी यूहन्ना और यीशु को भविष्यद्वक्ता मानती है। यहाँ नेता का प्रश्न शत्रुता से प्रेरित है और संभवतः यीशु को कुछ ऐसा कहने के लिए फँसाने की इच्छा से प्रेरित है जिसे ईशनिंदा के रूप में समझा जा सकता है।

लेकिन यीशु ने इस प्रश्न पर बात को पलट दिया, नेताओं से एक ऐसा प्रश्न पूछकर जिसका उत्तर देने की उनकी हिम्मत नहीं थी, यूहन्ना के अधिकार के स्रोत के बारे में प्रश्न, 21:25. फिर उसने उनसे दो बेटों के बारे में एक दृष्टांत का जवाब देने के लिए कहा, और इस बार उन्होंने विनाशकारी परिणामों के साथ उत्तर दिया, 21:28 से 31. उनका पाप न केवल दूसरे बेटे की तरह, जो उन्होंने वादा किया था उसे पूरा करने से इनकार करना है, बल्कि पहले बेटे के उदाहरण का पालन करने से भी इनकार करना है, जो कर संग्रहकर्ताओं और वेश्याओं का प्रतिनिधित्व करता है जिनके पश्चाताप ने नेताओं को पश्चाताप करने के लिए प्रभावित किया होगा, 21:32.

मंदिर में यीशु के कार्य उसके ऊपर उसके अधिकार को प्रदर्शित करते हैं। 12:6 के अनुसार, यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो मंदिर से भी बड़ा है। इस अंश से यह स्पष्ट है कि राज्य का शिष्य होने के लिए केवल शब्दों की नहीं, बल्कि कर्मों की आवश्यकता होती है। किसी के शुरुआती शब्द उसके बाद के कर्मों से उलट हो सकते हैं, और कर्म ही मायने रखते हैं।

यह सोचना आश्चर्यजनक है कि मंदिर के अधिकारी, कानून के अपने ज्ञान और अपने धार्मिक व्यवसाय के बावजूद, पिता की इच्छा को पूरा नहीं करते हैं। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक यह है कि कुख्यात पापियों को पश्चाताप में राज्य में लाने में परमेश्वर की कृपा पर विचार करें। वापस जाएँ और 9:10 से 13 तक देखें।

यह अंश आज के ईसाइयों को चेतावनी देता है कि वे परमेश्वर के सामने अपनी कथित धार्मिक स्थिति को न मानें और यह न मानें कि कुख्यात पापियों की अधर्मी स्थिति नहीं बदल सकती। किसी को अपनी कथित धार्मिकता के बारे में किसी दूसरे की कथित अधार्मिकता से ज़्यादा लापरवाह होने की हिम्मत नहीं करनी चाहिए। पिता का राज्य में बुलावा आज भी शक्तिशाली है, लेकिन राज्य में प्रवेश का वादा उन लोगों के लिए नहीं किया गया है जो केवल प्रभु, प्रभु कहते हैं, बल्कि उन लोगों के लिए किया गया है जो वास्तव में पिता की इच्छा पूरी करते हैं।

7:21 पर वापस जाएँ। अब, इस अंश में इस्राएल और कलीसिया पर कुछ टिप्पणियाँ। ईसाई व्याख्याकारों के लिए दो बेटों के दृष्टांत को छुटकारे के इतिहास के संदर्भ में देखना आम बात है, जिसमें पहला बेटा, जिसने शुरू में मना कर दिया लेकिन बाद में आज्ञा का पालन किया,

अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करता है, और दूसरा बेटा, जिसने शुरू में वादा किया था लेकिन बाद में मना कर दिया, इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है।

हालाँकि, यह व्याख्या संदर्भ में नहीं पाई जाने वाली किसी चीज़ को स्थापित करती है, ईश्वर की समग्र योजना में यहूदियों और अन्यजातियों का संबंध। संदर्भगत ध्यान यहूदियों की जॉन के प्रति प्रतिक्रिया पर है, इसलिए इस दृष्टांत द्वारा वर्णित पक्षों को यहूदियों बनाम अन्यजातियों के रूप में नहीं, बल्कि इज़राइल के भीतर समूहों के रूप में देखना अधिक बेहतर है। जॉन और जीसस दोनों के संदेश यहूदियों को एक युगांतकारी उलटफेर का सामना कराते हैं जिसमें प्रतिष्ठान में पश्चाताप न करने वाले लोगों को बिना किसी हैसियत वाले पश्चाताप करने वाले लोगों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है, लेकिन मताधिकार से वंचित प्रतिस्थापन उतने ही यहूदी हैं जितने कि वंचित पूर्व नेता।

और आज के मुख्य रूप से गैर-यहूदी चर्च के लिए सबक यह है कि यहूदी प्रतिष्ठान की गलती को दोहराने से बचें, जैसा कि पौलुस ने रोमियों 11:19 से 22 में सिखाया था। और अब जब हम अध्याय 21 की आयत 33 से 46 में दुष्ट किरायेदार किसानों के दृष्टांत में आगे बढ़ते हैं, तो यह दृष्टांत पुराने नियम के दो विषयों, इस्राएल के परमेश्वर की दाख की बारी और भविष्यद्वक्ताओं की अस्वीकृति को जोड़ता है, जिसमें परमेश्वर के रहस्योद्घाटन की परिणति के रूप में यीशु और इस्राएल के विद्रोह की परिणति के रूप में उनकी अस्वीकृति का नया विषय है। यह दृष्टांत 21:23 में यीशु के अधिकार के स्रोत के बारे में यहूदी नेताओं के सवाल का यीशु का उत्तर जारी रखता है।

उसका अधिकार परमेश्वर से आता है, जो इस्राएल के दाख की बारी का स्वामी है। परमेश्वर अपने लोगों के नेताओं के साथ आश्चर्यजनक रूप से धैर्यवान है, जिन्होंने अपने पूरे इतिहास में नियमित रूप से उसके दूतों को अस्वीकार किया है। परमेश्वर के लोगों के इन नेताओं द्वारा व्यवस्था के अनुसार फल या सही जीवन नहीं उत्पन्न किया गया है।

अब वे मालिक के बेटे, यीशु को नष्ट करने वाले हैं, यह सोचकर कि इससे लोगों पर उनके निरंतर अधिकार का रास्ता साफ हो जाएगा। लेकिन दाख की बारी के मालिक के पास अभी भी अंतिम शब्द होगा, उन नेताओं को नष्ट करना और उनकी जगह नए लोगों, यीशु के शिष्यों को लाना। अंततः, परमेश्वर को अपने लोगों से फल मिलेगा।

इस प्रकार, दुष्ट किसानों का दृष्टांत छुटकारे का एक लघु इतिहास है। यह यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान की उतनी ही भविष्यवाणी है जितनी यीशु द्वारा की गई पीड़ा की भविष्यवाणियाँ। अब यहाँ मैथ्यू की पृष्ठभूमि स्पष्ट रूप से यशायाह के अध्याय 5 की आयत 1 से 7 में दाख की बारी के गीत से आती है। यशायाह 5:1 से 7 स्पष्ट रूप से इस्राएल की बेवफ़ाई की निंदा करता है, और यह एक अच्छी तरह से खेती की गई दाख की बारी की कल्पना के साथ ऐसा करता है जो अस्पष्ट रूप से अच्छे फल पैदा करने में विफल रहता है।

प्रियतम द्वारा उपजाऊ पहाड़ी को आशाजनक दाख की बारी में बदलने का वर्णन यशायाह 5:1 और 2 में छह चरणों में किया गया है। ये चरण मत्ती 21:33 और 34 में दिए गए छह चरणों से

बहुत मिलते-जुलते हैं, हालाँकि मत्ती 21 चरणों को उसी क्रम में नहीं रखता है। अब आइए संक्षेप में बात करें कि मत्ती 21:43 में राज्य के लिए जाने और दिए जाने के बारे में किस तरह बात करता है। ईसाई व्याख्याकारों ने अक्सर मत्ती 21:43 को परमेश्वर के लोगों के रूप में राष्ट्रीय इस्राएल के पतन और मुख्य रूप से गैर-यहूदी चर्च द्वारा इसके स्थान पर आने की भविष्यवाणी के रूप में देखा है।

लेकिन विद्रोही किसानों द्वारा किस समूह का प्रतिनिधित्व किया जाता है, जिनसे दाख की बारी पर अधिकार छीन लिया जाना है? दृष्टांत के संदर्भ में, इस्राएल का प्रतिनिधित्व दाख की बारी द्वारा किया जाता है, न कि किसानों द्वारा, जो जाहिर तौर पर इस्राएल के नेताओं के लिए खड़े होते हैं। यह दृष्टांत के प्रति इस्राएल के नेताओं की प्रतिक्रिया और यीशु पर इसके अनुप्रयोग में स्पष्ट किया गया है 21:45. वे पहचानते हैं कि वह उनके बारे में बात कर रहा है।

वे 21:35-39 में विद्रोही किसान हैं। वे 21:42 में पत्थर को अस्वीकार करने वाले बिल्डर हैं, और वे ही हैं जो 21:44 में पत्थर द्वारा टुकड़े-टुकड़े करके चूर्ण में बदल दिए जाते हैं। वर्तमान यहूदी धार्मिक नेताओं के साथ दृष्टांत के विद्रोही किसानों की पहचान काफी स्पष्ट प्रतीत होती है।

लेकिन अगर 21:43 में इन यहूदी नेताओं से राज्य का अधिकार छीने जाने की बात कही गई है, तो पाठ में किसको राज्य का अधिकार दिए जाने की बात कही गई है? कुछ विद्वान इस वाक्यांश को निर्णायक सबूत के रूप में लेते हैं कि एक नया राष्ट्र, चर्च, परमेश्वर की योजना में इस्राएल के राष्ट्र की जगह ले चुका है। लेकिन यह दृष्टिकोण उस इकाई की पिछली चर्चा को देखते हुए अविश्वसनीय है जिससे राज्य छीन लिया गया है। 21:43 में सर्वनाम तुम का परवलयिक पूर्ववर्ती विद्रोही किसान है, न कि फलदार दाख की बारी।

निम्नलिखित संदर्भ में, यह स्पष्ट है कि यहूदी नेताओं का मानना था कि यीशु उनके बारे में बात कर रहे थे, न कि पूरे इस्राएल के बारे में, 21:46। इस प्रकार, इस आयत को गैर-यहूदी चर्च द्वारा इस्राएल के प्रतिस्थापन के रूप में देखना बहुत अधिक है। न ही मैथ्यू द्वारा 21:43 में राष्ट्र शब्द का उपयोग, जो यूनानी में एथनोस है, स्पष्ट रूप से इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

यदि आप अध्ययन करें कि उसने अपने सुसमाचार में राष्ट्र शब्द का किस तरह से उपयोग किया है। बल्कि, मत्ती हमें सिखा रहा है कि जो लोग फल पैदा करते हैं, यानी जो राज्य की नैतिकता का पालन करते हैं, वे उन विद्रोही किसानों की जगह लेंगे जो ज़मींदार को फसल देने से इनकार करते हैं। ये लोग, यह इकाई जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करती है और उसका फल पैदा करती है, एक नैतिक इकाई है, न कि एक जातीय इकाई।

मैथ्यू के विचार में, उसका राज्य और उसके जैसे अन्य लोग, जो यीशु को टोरा का अंतिम शिक्षक मानते हैं, राज्य की नैतिकता का पालन करते हैं। यहूदी या गैर-यहूदी, वे ही हैं जो यरूशलेम के धार्मिक प्रतिष्ठान की जगह इज़राइल के नेताओं के रूप में लेते हैं। इसके अलावा, यहाँ इज़राइल और चर्च का मामला है।

मत्ती 21:33 से 46 मत्ती द्वारा यहूदी धार्मिक प्रतिष्ठान पर लगाए गए अभियोग का हिस्सा है, जिसका इज़राइल का नेतृत्व करने का मताधिकार मत्ती के ईसाई यहूदी समुदाय के लिए जब्त कर लिया जाएगा। मत्ती 21:43 का राष्ट्र मिथियन समुदाय को एक युगांतकारी मसीहाई अवशेष के रूप में बताता है, जिसके नेता यरूशलेम में वर्तमान धार्मिक प्रतिष्ठान की जगह लेंगे और फल देने में इज़राइल का नेतृत्व करेंगे, जो परमेश्वर के लिए धार्मिकता का फल लाएगा। मत्ती 21:33 से 46, तो, एक अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से व्याख्या नहीं की जानी चाहिए, यानी, एक तरह से जिसमें गैर-यहूदी यहूदियों का उत्तराधिकारी बनते हैं जिनके पास परमेश्वर की योजना में आगे कोई मताधिकार नहीं है।

इस प्रकार की व्याख्या वास्तव में चर्च के इतिहास में कुछ ऐसी रही है जिसने दुखद रूप से यहूदी-विरोधी भावना का समर्थन किया है, और अब समय आ गया है कि हम ऐसी व्याख्या पर पुनर्विचार करें जो एक ऐसे धर्मशास्त्र का समर्थन करती है जो अक्सर यहूदी-विरोधी भावना और नरसंहार तथा यहूदियों के साथ होने वाली अकल्पनीय घटनाओं के अभ्यास में शामिल है। इसके बजाय मैथ्यू 21:33 से 46 की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए कि राज्य में नेतृत्व का एक आंतरिक हस्तांतरण फलहीन यरूशलेम धार्मिक प्रतिष्ठान से यीशु के प्रेरितों के नेतृत्व में फलदायी मिथियन ईसाई यहूदी समुदाय को हुआ। यह समुदाय इज़राइल के युगांतकारी अवशेष के बराबर है, जो सभी देशों तक अपने क्षितिज का विस्तार करते हुए इज़राइल के लिए अपना मिशन जारी रखता है।

यह नए नियम के बाइबिल धर्मशास्त्र की बड़ी योजना में है। यह युगांतकारी यहूदी अवशेष नवजात चर्च का केंद्र बन जाता है। हालाँकि चर्च मुख्य रूप से गैर-यहूदियों को मसीहा यीशु के लिए जीतकर फैलता है, लेकिन अब्राहम के वंश के लिए परमेश्वर के वादों में इसकी जड़ें नहीं भूलनी चाहिए।

यीशु ने सामरी स्त्री से जो कहा, उसे यहाँ दोहराना ज़रूरी है। यहाँ उद्धृत करें कि उद्धार यहूदियों के माध्यम से आता है। यूहन्ना 4:22, और कई अन्य अंश। अब हमें आगे बढ़ने की ज़रूरत है, ठीक है, मुझे लगता है कि हमें मत्ती 22 में जो देखा, उसका सारांश देने की ज़रूरत है।

यरूशलेम में उनकी मृत्यु की पूर्व भविष्यवाणियों के बाद, और मैथ्यू द्वारा भौगोलिक रूप से दृश्य निर्धारित करने के बाद, यीशु का यरूशलेम में महत्वपूर्ण विजयी प्रवेश हुआ है। मैथ्यू फिर मंदिर में यीशु की गतिविधियों का वर्णन करता है, जिसमें पैसे बदलने वालों को बाहर निकालना, अंधे और लंगड़ों को ठीक करना और मुख्य पुजारियों और शास्त्रियों का सामना करना शामिल है। इसके बाद, अंजीर के पेड़ को शाप देना प्रार्थना के लिए एक वस्तु पाठ बन जाता है।

मंदिर में फिर से प्रवेश करते हुए, यीशु अपने अधिकार के बारे में मुख्य पुजारियों और बुजुर्गों के सवाल का जवाब देते हैं। यह जवाब तीन चरणों में आता है, जिसमें से पहला वह यहूदी नेताओं से एक सवाल पूछता है, जिसका जवाब देने से वे इनकार कर देते हैं। फिर वह एक ऐसे व्यक्ति के बारे में एक संक्षिप्त कहानी सुनाता है जिसके दो बेटे थे, और फिर वह अपने अंगूर के बगीचे में एक ज़मींदार के बारे में एक और कहानी सुनाता है।

अध्याय का समापन फरीसियों की इस समझ के साथ होता है कि यीशु की कहानियाँ उन्हें दोषी ठहराती हैं, और वे उसे पकड़ने की कोशिश कर रहे हैं, हालाँकि वे भीड़ से डरते हैं। अध्याय 22 भी इसी तरह जारी है, जहाँ यीशु फरीसियों को अपने दृष्टांत सुनाते हैं, जो उनके खिलाफ अपनी साज़िश को आगे बढ़ाते हैं। अब आगे बढ़ते हैं, जैसा कि मैंने अध्याय 22 में कहा था।

सबसे पहले, विवाह भोज का दृष्टांत। मत्ती 22:1 से 14 में 22:1 में एक कथात्मक परिचय शामिल है। दृष्टांत, सही मायने में, 22:2 से 13 में है, और फिर 22:14 में एक सामान्य निष्कर्ष है। दृष्टांत में ही एक राजा द्वारा की जाने वाली गतिविधियों के चार चक्र शामिल हैं।

पहला चक्र पद 2 में, दूसरा पद 4 में, तीसरा पद 7 में, और चौथा पद 11 में। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, विवाह भोज का दृष्टांत तीन दृष्टांतों के समूह में तीसरा है, जो कई विषयों को साझा करते हैं और साथ मिलकर इस्राएल के नेताओं के खिलाफ मामला बनाते हैं। तीनों दृष्टांत, दो बेटों का दृष्टांत, दुष्ट किरायेदार किसानों का दृष्टांत, और अंत में विवाह भोज के बारे में यह दृष्टांत मूल रूप से इस बारे में बात करते हैं कि कैसे इस्राएल के नेताओं ने परमेश्वर के मसीहा को अस्वीकार कर दिया है और परमेश्वर को खो दिया है।

ये तीनों दृष्टांत विफलता के बारे में हैं, चाहे वह दूसरे बेटे का हो, किरायेदार किसानों का हो, या मूल रूप से शादी की दावत में आमंत्रित लोगों का हो, या फिर इस दृष्टांत के अंत में बिना शादी के कपड़े पहने हुए आदमी का हो। इस दृष्टांत के सामान्य दृष्टिकोण के अनुसार, राजा परमेश्वर अपने सेवकों को अपने बेटे यीशु के विवाह भोज में अपने अधीन इस्राएल को आमंत्रित करने के लिए भविष्यद्वक्ताओं के पास भेजता है। प्रजा ने आकर राजा के सेवकों को मारने से इनकार कर दिया, इसलिए राजा ने अपनी सेनाएँ रोम भेजीं और यरूशलेम शहर को नष्ट कर दिया।

फिर मेहमानों को मुख्य राजमार्गों, यानी गैर-यहूदियों से सुरक्षित रखा जाता है। बिना कपड़ों के शादी के मेहमान, यानी एक पाखंडी को दंडित किया जाता है। अब, इस आम व्याख्या में सच्चाई है, लेकिन यह संदिग्ध है कि दृष्टांत का उद्देश्य यहूदियों से गैर-यहूदियों तक एक मुक्तिदायक ऐतिहासिक संक्रमण को व्यक्त करना था।

जिन लोगों ने परमेश्वर के दूतों को पकड़ा, उनका मज़ाक उड़ाया और उन्हें मार डाला, वे पूरे इस्राएल के नहीं बल्कि इस्राएल के नेता हैं। धर्मशास्त्रीय रूप से कहें तो, जैसा कि इस विवाह भोज के दृष्टांत के संबंध में है, दृष्टांत का निष्कर्ष यह है कि 22:14 में बहुत से लोगों को बुलाया जाता है, लेकिन कुछ ही चुने जाते हैं। इसे पूरे दृष्टांत के सार के रूप में समझा जाना चाहिए।

फिर दृष्टांत इस बात पर जोर देता है कि यहूदी नेताओं ने परमेश्वर के शासन और यीशु मसीहा के साथ किस तरह का तिरस्कार किया है। कुछ लोग तो बस उदासीन रहे हैं, 22:5, लेकिन अन्य लोग और भी अधिक शत्रुतापूर्ण होते जा रहे हैं। निमंत्रण बहुतों को दिया गया है, लेकिन केवल अपेक्षाकृत कम लोगों ने ही प्रतिक्रिया दी है।

विवाह के वस्त्र के बिना व्यक्ति का विनाशकारी अंत एक ऐसा आयाम जोड़ता है जो पिछले दो दृष्टांतों में नहीं पाया गया है। इस व्यक्ति का भाग्य स्पष्ट रूप से उन लोगों के भयानक अंत को

चित्रित करता है जो अंततः राज्य में यीशु को अस्वीकार करते हैं, चाहे वे धर्मी प्रतीत हों या नहीं। इस संबंध में, 22:11-13 अंतिम निर्णय को चित्रित करता है, लेकिन इस व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से विवाह भोज के निमंत्रण का जवाब दिया है और भोज कक्ष में इकट्ठा हुआ है।

फिर भी उसके वस्त्र से पता चलता है कि वह वास्तव में वहाँ का नहीं था। उसका भाग्य पाठकों को 7:15-23 में झूठे भविष्यद्वक्ताओं और 13:42 में अधर्मियों की याद दिलाता है। दृष्टान्त के इस भाग के माध्यम से, यीशु अपने शिष्यों को चेतावनी देते हैं कि उनकी मुसीबतें केवल बाहरी विरोधियों से नहीं आएंगी।

वे आत्मसंतुष्ट नहीं हो सकते और ईश्वरीय स्वीकृति की ऐसी धारणा नहीं बना सकते जो यीशु द्वारा दी गई सभी आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यकता को दरकिनार कर दे। अब हम 22:15-22 में करों का भुगतान करने के मामले पर आगे बढ़ते हैं। यीशु अपने अधिकार के स्रोत के बारे में यहूदी नेता के सवाल के जवाब में 21:24 से 22:14 तक बोलते रहे हैं।

यहाँ 22:15 में तीन टकरावों की एक श्रृंखला शुरू होती है जहाँ यहूदी नेता यीशु की बुद्धि को चुनौती देने का प्रयास करते हैं। हालाँकि, यीशु साबित करते हैं कि उनकी शिक्षा फरीसियों, 22:15-34, सदूकियों, 22:23, और 22:16 में हेरोदियों की शिक्षाओं से कहीं बेहतर है। अंत में, वह उनके सभी सवालों का जवाब देता है, लेकिन वे उसके एक सवाल का जवाब नहीं दे पाते, 22:46।

सम्राट को कर देने के औचित्य के बारे में प्रश्न पर यीशु का शानदार उत्तर हेरोदियों और फरीसियों दोनों को उलझन में डालता है। कर संग्रहकर्ताओं से दोस्ती करने वाले व्यक्ति से सरल सकारात्मक उत्तर की अपेक्षा की जा सकती थी, लेकिन इससे फरीसियों और उन लोगों को अलग-थलग कर दिया जाता जो और भी अधिक राष्ट्रवादी थे। 22:11 में हाल ही में मसीहाई शब्दों में प्रशंसा किए गए व्यक्ति से सरल नकारात्मक उत्तर की अपेक्षा की जा सकती थी, लेकिन इससे यीशु पर राजद्रोह का आरोप लग सकता था।

सबसे अधिक संभावना है कि फरीसी नकारात्मक उत्तर की तलाश में थे, लेकिन वे जो सुनते हैं उससे चकित हो जाते हैं। हेरोदेस विरोधी फरीसियों से कहा जाता है कि उन्हें रोमन सरकार को कर देना चाहिए, जाहिर है क्योंकि ईश्वर की कृपा से रोमनों को यहूदियों के ऊपर रखा गया है। हेरोदेसियों को याद दिलाया जाता है कि सम्राट के प्रति उनकी निष्ठा ईश्वर के प्रति उनकी निष्ठा से अधिक नहीं हो सकती।

जो सीज़र का है, वह सीज़र को दो, जो ईश्वर का है, वह ईश्वर को दो। सम्राट के सिक्के पर लिखावट गलत है। वह न तो ईश्वर है और न ही महायाजक।

लेकिन यीशु के पाखंडी प्रश्नकर्ता ईशानिंदा वाले सिक्के को मंदिर परिसर में ले आए हैं। इसलिए, निष्कर्ष के तौर पर, यीशु कर की वैधता को नकार कर फरीसियों को सांत्वना नहीं देते हैं, लेकिन न ही वे रोमियों के प्रति अंधी वफादारी की पुष्टि करके हेरोदियों को सांत्वना देते हैं। यीशु ने वास्तव में अपने प्रश्नकर्ताओं की कपटी चापलूसी के बावजूद ईमानदारी से परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा दी है।

अब हम विवाह और पुनरुत्थान के मामले पर आगे बढ़ते हैं, जो कई मायनों में एक बहुत ही पेचीदा प्रकरण है। सद्दूकियों के साथ यह मुठभेड़ फरीसियों के साथ पिछले प्रकरण के समान है। दोनों उदाहरणों में, यीशु से उन लोगों द्वारा एक अलग सवाल पूछा जाता है जो उसे फंसाना या बदनाम करना चाहते हैं, लेकिन उसका जवाब उन्हें बदनाम करता है और उन्हें आश्चर्यचकित करता है।

हालाँकि, इस मामले में, सवाल एक गर्म राजनीतिक मुद्दे, कराधान के इर्द-गिर्द नहीं घूमता, बल्कि शास्त्र की व्याख्या के इर्द-गिर्द घूमता है। सद्दूकियों ने यीशु से व्यवस्थाविवरण 5:5 में लेविरेट विवाह के आदेश के मद्देनजर जीवन के बाद की धारणा से निपटने के लिए कहा। वे स्पष्ट रूप से मानते हैं कि टोरा-आधारित लेविरेट विवाह को फरीसियों की जीवन के बाद की धारणा के साथ नहीं जोड़ा जा सकता है। या शायद वे बस यीशु को फरीसियों के खिलाफ अपने पक्ष में लाना चाहते हैं।

उनका एजेंडा चाहे जो भी हो, यीशु उन्हें बताते हैं कि पुनरुत्थान को नकारना अज्ञानता के कारण हुई गलती है। पुनरुत्थान और परलोक के बारे में उनका दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से पहले की तरह जीवन में पुनः प्राण फूंकने जैसा है। वे लोगों को उनके पुनरुत्थान के समय बदलने की ईश्वर की शक्ति से अनभिज्ञ हैं ताकि वे अब यौन रूप से सक्रिय प्राणी न रहें।

यहाँ 1 कुरिन्थियों 15:35 और उसके बाद के भाग भी देखें। कामुकता प्रारंभिक सृष्टि की अच्छाई का हिस्सा है, लेकिन मत्ती 19:28 के पुनर्जन्म में जीवन, या 22:30 में वर्णित पुनरुत्थान, मूल सृष्टि के इस पहलू से परे होगा। यह परिवर्तन सद्दूकियों के लेविरेट कानून के उद्धरण को अप्रासंगिक बना देता है।

सद्दूकी भी शास्त्रों से अनभिज्ञ हैं, खास तौर पर निर्गमन 3.6 से। यीशु इस आयत से तर्क देते हैं कि कुलपिताओं के प्रति परमेश्वर की वाचा संबंधी वफ़ादारी का अर्थ है कि उनका और परमेश्वर के सभी लोगों का पुनरुत्थान होगा। संक्षेप में, यीशु अपने विरोधियों की चालाक आपत्ति को दोषपूर्ण अज्ञानता और खराब धर्मशास्त्र का उत्पाद मानते हैं। डेविस और एलिसन इस अंश के बारे में यही कहते हैं।

अब हम 22:34.40 में दी गई महान आज्ञा के मामले पर आगे बढ़ते हैं। यहूदी नेताओं के साथ यीशु की बातचीत से संबंधित यह तीसरी कहानी सबसे कम विवादास्पद है। 7:12 में दी गई शिक्षा की याद दिलाते हुए, इस आदान-प्रदान में, यीशु ने पुराने नियम की नैतिक शिक्षा को संक्षेप में संश्लेषित किया। यीशु की शिक्षा का एक प्रमुख हिस्सा कानून के साथ उसका संबंध रहा है, जैसा कि हमने 5:17-48 में बहुत पहले ही नोटिस करना शुरू कर दिया था। यहाँ कानूनी विशेषज्ञों का प्रश्न यह दर्शाता है कि कानून के बारे में यीशु का दृष्टिकोण उनके समकालीनों के दृष्टिकोण से किस तरह मेल खाता है।

यीशु प्रेम को कानून के विरुद्ध नहीं रखते, बल्कि हमेशा की तरह, वे इस बात पर पहुँचते हैं कि कानून का पालन करने का क्या मतलब है, अर्थात् परमेश्वर के लिए और परमेश्वर की छवि में बनाए गए लोगों के लिए प्रेम। यदि कोई वास्तव में परमेश्वर से प्रेम करता है, तो वह याकूब 3:9

और 10 के अनुसार, उसकी छवि धारण करने वालों से भी प्रेम करेगा। जब कोई मनुष्य से प्रेम करता है, तो वह अप्रत्यक्ष रूप से उनके सृष्टिकर्ता के प्रति प्रेम व्यक्त करता है।

यह मूल सिद्धांत मूसा की संहिता की विशिष्ट शर्तों और उन भविष्यद्वक्ताओं के संदेश का आधार है, जिन्होंने इस्राएल को मूसा की आज्ञाकारिता में वापस बुलाने का प्रयास किया था। नए नियम के अन्य ग्रंथ इस विषय को दोहराते हुए पुष्टि करते हैं कि प्रेम व्यवस्था का मूल दायित्व है। रोमियों 13:9 और 10, गलातियों 5:14, कुलुस्सियों 3:14, याकूब 2:8। जहाँ तक इस अंश के धर्मशास्त्र की बात है, हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि व्यवस्थाविवरण 6:5 को पहली और सबसे बड़ी आज्ञा के रूप में लेबल करके, यीशु का इरादा इसे लैव्यव्यवस्था 19:18 के लिए आधारभूत के रूप में देखना था। क्या पतित मनुष्य अपने पड़ोसियों से अपने समान प्रेम करना शुरू कर सकते हैं यदि उन्होंने पहले परमेश्वर की उन पर कृपा और परमेश्वर से प्रेम करने के अपने पूर्व दायित्व को स्वीकार नहीं किया है? मनुष्यों के प्रति ईश्वरीय प्रेम उन्हें परमेश्वर और उनके साथी मनुष्यों के प्रति प्रेम से प्रतिक्रिया करने में सक्षम बनाता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि ईश्वर-केंद्रित या ऊर्ध्वाधर दायित्व मानव-केंद्रित या क्षैतिज दायित्व का आधार है। यही कारण है कि यह कथन, मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, निर्गमन 20:2 और व्यवस्थाविवरण 5.6 में दस आज्ञाओं की शुरुआत में ही दिखाई देता है। जबकि लैव्यव्यवस्था 19:18 व्यवस्थाविवरण 6:5 के समान ही महत्वपूर्ण हो सकता है, यह व्यवस्थाविवरण 6:5 की नींव से अलग नहीं हो सकता। लैव्यव्यवस्था 19:18 के बिना, कोई व्यक्ति व्यवस्थाविवरण 6.5 का अभ्यास नहीं कर सकता है क्योंकि व्यक्ति परमेश्वर के प्रति प्रेम को उसकी आज्ञाओं का पालन करके व्यक्त करता है, जिनमें से कई लोगों के साथ संबंधों से संबंधित हैं। लैव्यव्यवस्था 19:18 उनके नए नियम में प्रतिध्वनित करता है कि व्यक्ति सहज रूप से खुद से प्यार करेगा।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक शब्दावली में ईश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए खुद से प्रेम करना सीखने की आवश्यकता को बाइबिल के पैटर्न के विपरीत बताया गया है। इफिसियों 5:28 और 29 की तुलना करें। अब, दाऊद के बेटे के बारे में अंतिम पेरिकोप दाऊद के प्रभु के बारे में भी है।

इस अंश में, यीशु फरीसियों से सवाल करने की पहल करता है, लेकिन वह केवल उन्हें फँसाने की कोशिश नहीं कर रहा है, जैसे कि वे खुद वही हैं। वह बहस जीतने की कोशिश में शामिल नहीं है, बल्कि अपनी शिक्षा से उनके दिलों को जीतने की कोशिश कर रहा है। 23.37 यह स्पष्ट करता है।

उन्होंने जो मुद्दे उठाए हैं, रोम के करों की वैधता, युगांत संबंधी अटकलें और यहां तक कि मौलिक नैतिक दायित्व भी, इजरायल के इतिहास के इस निर्णायक मोड़ पर सर्वोपरि विचारणीय नहीं हैं। सर्वोपरि मुद्दा यह है कि यीशु मसीहा हैं और वे उन्हें अस्वीकार करने की प्रक्रिया में हैं। राजा दाऊद के साथ उनका रिश्ता इस महत्वपूर्ण क्षण में उनके विचारणीय है।

यहूदी नेता और यीशु इस बात पर सहमत हैं कि मसीहा दाऊद का पुत्र है, 22:42, लेकिन असली सवाल यह है कि मसीहाई पहचान की इस पुष्टि का क्या मतलब है? यीशु के दूसरे और तीसरे

सवाल मामले को उजागर करते हैं। 22:43 में दूसरा सवाल मसीहा की मानवता को दाऊद के वंशज के रूप में मानता है। यह मानते हुए कि मसीहा दाऊद का मानव वंशज है, भजन 110:1 में दाऊद उसे प्रभु कैसे कहता है? तीसरा सवाल इसे विपरीत तरीके से प्रस्तुत करता है।

यदि मसीहा दाऊद का प्रभु है, तो वह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है? मैथ्यू के धर्मशास्त्र में, यीशु की विनम्र दाऊदी जड़ें पूरी कहानी नहीं हैं। यीशु चमत्कारिक रूप से जन्मे, ईश्वर द्वारा प्रमाणित ईश्वर के पुत्र भी हैं। मैथ्यू ने पहले संकेत दिया है कि यीशु दाऊद से महान हैं, और अब वह बताते हैं कि क्यों।

दाऊद का पुत्र परमेश्वर का पुत्र भी है। इस बारे में और भी बहुत कुछ कहा जाना बाकी है, लेकिन हमें आने वाली बातों पर विचार करना होगा। मत्ती 22 में यरूशलेम में यीशु और यहूदी नेताओं के बीच गरमागरम विवादों का वर्णन जारी है, जो विजयी प्रवेश के तुरंत बाद शुरू हुआ था।

विवाह भोज का दृष्टांत, 22:1-14, 21:28 में शुरू हुए दृष्टांतों की श्रृंखला में तीसरा है। तीनों दृष्टांत इस तथ्य पर जोर देते हैं कि नेताओं ने अवज्ञाकारी बेटे, दुष्ट किरायेदार किसानों और अब विद्रोही प्रजा की छवियों का उपयोग करके भगवान और मसीहा यीशु के शासन को अस्वीकार कर दिया है, जो राजा के निमंत्रण को अस्वीकार करते हैं। दृष्टांत अनुक्रम के बाद, तीन विवादास्पद कहानियाँ हैं जिनकी हमने अभी चर्चा की है। कुल मिलाकर, मैथ्यू 22 यीशु और यहूदी नेताओं के बीच मौखिक शत्रुता को उनके दुखद अंत तक ले जाता है।

यीशु के दृष्टांत इस्राएल के विद्रोह और मसीह में परमेश्वर के शासन के अधीन न होने के अपराध को बढ़ाते हैं। यहूदी नेताओं के सवाल यीशु को फंसाने और उनकी शिक्षा को बदनाम करने का प्रयास करते हैं। अगर कभी कोई संदेह था, तो अब यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि यीशु और इस्राएल के नेताओं के बीच कोई मेल-मिलाप नहीं हो सकता।

उनके लिए उनका अंतिम उत्तर अप्रतिरोध्य है। दाऊद अपने मसीहा पुत्र को प्रभु तभी कह सकता है जब उसका पुत्र ईश्वरीय हो। जो फरीसी यीशु की पहचान को चुनौती देकर उसे फंसाना चाहते थे, वे अब स्वयं यीशु के जाल में फंस गए हैं, जिन्होंने खुद को दाऊद के वंशज और उनके महान प्रभु के रूप में पहचाना है।

लेकिन सभी संवाद अशुभ परिणामों के साथ बंद हो गए हैं।